॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

श्रीनिम्बार्कतीर्थ माहात्म्य

भगवान् श्रीराधामाधव–सर्वेश्वर प्रभु

''पद्मपुराण'' उत्तर खण्ड के अ. 158 में वर्णित निम्बार्कतीर्थ में कोलाहल दैत्य से सशङ्कित शङ्कर, विष्णु, इन्द्र और सूर्य ने सूक्ष्म रुप में विल्व में शम्भू, पीपल में भगवान् विष्णु, शिरीष में इन्द्र और निम्बतरु पर सूर्य ने आश्रय लिया तब महाविष्णु ने यहाँ प्रकट होकर उस दैत्य का संहार किया। सूर्य के निम्बवृक्ष पर आश्रय पाने पर यह स्थल निम्बार्कतीर्थ नाम से परम विख्यात हुआ

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *
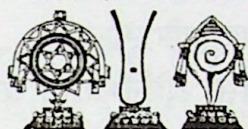
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीनिम्बार्कतीर्थ माहात्म्य

एवं

अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के दर्शनीय स्थल

तथा

आचार्यपीठस्थ पारमार्थिक संस्थायें

सम्पादक--

गोलोकवासी पं० गोविन्ददास 'सन्त'

निम्बार्कभूषण, धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ, द्वैताद्वैत विशारद

प्रकाशक--

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यचार्यपीठस्थ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ, जि० अजमेर (राज०)

श्रीकृष्णजन्माष्टमी महोत्सव

वि० सं० २०६७ श्रीनिम्बार्काब्द ५१०६

श्रीनिम्बार्कतीर्थ का परिचय

यह अति प्राचीन पौराणिक तीर्थ स्थल पश्चिम रेल्वे राजस्थान के किशनगढ़ स्टेशन से १८ कि० मी० उत्तर की ओर अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) जिला-अजमेर किशनगढ़-राजस्थान में विद्यमान है।

इस तीर्थ-स्थल की महत्ता-

इस तीर्थ स्थल का भगवान् वेदव्यास कृत पद्मपुराणान्तर्गत उत्तर खण्ड अध्याय १५८ में महत्वपूर्ण उल्लेख है। यह तीर्थ अरावली पर्वतमाला की विशाल उपत्यका में स्थित तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज क्षेत्रान्तर्गत पिप्पलाद तीर्थ एवं साभ्रमती नदी के समीप परम शोभायमान है। यह पिप्पलाद तीर्थ आज भी पीपलाद ग्राम के नाम से यहाँ सुप्रसिद्ध है जहाँ पर कई विशाल-विशाल पीपल के पेड़, शिव मन्दिर एवं गुफा आदि हैं जो इसकी प्राचीनता के द्योतक हैं।

इस परम पवित्र स्थली श्रीपुष्कर क्षेत्र की पावन भूमि में कश्यप, कपिल, जमदाग्नि, अगस्त्य, भारद्वाज, मंकण, विश्वामित्र, वामदेव प्रभृति अनेक ऋषि-महर्षियों ने कन्द मूल फलादि का आहार करके हजारों-हजारों वर्ष पर्यन्त तपश्चर्या की है, जिनके जहाँ-जहाँ पर्वत कन्दराओं में गुफायें एवं कुण्ड बने हुये हैं। महर्षि दधीचि के पुत्र जिन्होंने केवल पीपल वृक्ष के पत्ते खाकर ही इस क्षेत्र में तपस्या की है--पीपल के पत्तों का आहार करने से ही उनका नाम पिप्पलाद विख्यात हुआ। जहाँ उन्होंने बैठकर तप किया उस स्थान का भी

नाम पिप्पलाद कहलाया, बस उसी नाम का अपभ्रंश होकर आज वह पीपलाद ग्राम के नाम से प्रसिद्ध है।

इसी प्रकार साभ्रमती नदी भी यहीं है जो कि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से पश्चिम की ओर एक किलोमीटर की दूरी पर करकेड़ी ग्राम मार्ग में पड़ती है। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साबरमती तो अहमदाबाद के पास गुजरात में है, यहाँ कहाँ ? साभ्रमती शब्द का ही अपभ्रंश होकर साबरमती नाम हो गया होगा ?

इस प्रश्न का समाधान भी पद्मपुराण के ही कतिपय प्रमाणों द्वारा स्पष्ट हो जाता है। अरावली पहाड़ आबू माउन्ट तक ही है, आगे गुजरात में साबरमती के पास नहीं। अरावली पर्वत, पुष्करारण्य, पिप्पलाद तीर्थ, निम्बार्कतीर्थ यह सब उस साबरमती के पास कहाँ? यह सब तो इसी साभ्रमती के पास है। फिर पद्म पुराणोक्त साभ्रमती माहात्म्य में तो वैद्यनाथ महादेव, कपालेश्वर महादेव गया कुन्ड, नंदा प्राची सरस्वती और ब्रह्माजी का मन्दिर ये सब पास में बताये हैं, सो ये सब बातें वहाँ कहाँ? ये तो सब इसी पुष्करारण्य वाली साभ्रमती के पास हैं। अतः पद्मपुराण के प्रमाणानुसार यही साभ्रमती निश्चित है।

पद्मपुराण के साभ्रमती माहात्म्य में वर्णन किया है--

पितृतीर्थं गयानाम सर्वतीर्थवरं शुभम् ।
यत्राऽऽस्ते देवदेवेशः स्वयमेव पितामहः ।।

जहाँ पर सर्वश्रेष्ठ गया कुण्ड नामक पितृतीर्थ है और देवाधिदेव स्वयं पितामह श्रीब्रह्माजी महाराज विराजमान हैं। यह गया कुण्ड कनिष्ठ अर्थात् वृद्ध पुष्कर के पास सूदावाय के नाम से

प्रसिद्ध है। आज भी जब कभी शुक्ल पक्ष में चतुर्थी मंगलवार आ जाता है। तब यहाँ मेला लगता है, पितृ श्राद्ध भी कई लोग करवाते हैं। मंगला चौथ के दिन यहाँ के श्राद्ध को गया श्राद्ध के समान मानते हैं।

इन प्रमाणों से निश्चय हो जाता है कि यहाँ पर यही साभ्रमती नदी है, जिसके पास श्रीनिम्बार्कतीर्थ है। पद्मपुराण में लिखा भी है कि "तीर्थं साभ्रमती तीरे" साभ्रमती नदी के किनारे पर यह तीर्थ है। यह साभ्रमती नदी काश्यपी गंगा के नाम से कही है। ऋषि-महर्षियों की प्रार्थना पर महर्षि कश्यप इसको लाये थे, ऐसा वर्णन है। इस गंगा के चारों युगों में भिन्न-भिन्न नाम रहे हैं जैसे--

कृते कृतवती नाम त्रेतायां गिरिकर्णिका।
द्वापरे चन्दना नाम "कलौ साभ्रमती स्मृता"।।

सत्ययुग में कृतवती, त्रेता में गिरिकर्णिका, द्वापर में चन्दना और कलियुग में साभ्रमती नाम है।

अतः श्रीपुष्करारण्य में, पिप्पलाद तीर्थ से कुछ दूर साभ्रमती के तट पर श्रीनिम्बार्कतीर्थ का जो वर्णन है वह तीर्थ यही है।

इसके अतिरिक्त और एक बात है, पद्मपुराण के इस श्री निम्बार्कतीर्थ माहात्म्य में ही आया है कि--कोलाहल नामक दैत्य के भय से यहाँ भगवान् सूर्य ने नीम का आश्रय लिया और भगवान् विष्णु ने पीपल वृक्ष का। अतः श्रीनिम्बार्कतीर्थ के नीम पीपल आदि वृक्षों को काटने का यहाँ पर कई शताब्दियों से निषेध रहा है। किशनगढ़ राज्य के संस्थापन काल वि० सं० १६४३ या १६६४ के पहले से भी यहाँ देव वृक्षों को काटना निषेध था। किशनगढ़ नरेशों ने भी उस समय नियम का पूर्णरूप से पालन किया। किशनगढ़

राज्य के २१० ग्रामों में कहीं भी कोई इन वृक्षों को नहीं काटता था। सूखा या हरा नीम आदि देववृक्ष गिर जाता तो राज्य एवं प्रजाजन उसका उपयोग भी नहीं करते थे। श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में उसकी सूचना की जाती थी और यहाँ उसे लाकर भगवत्सेवा के उपयोग में लेते थे। ऐसी यह मर्यादा भारत स्वतन्त्र होने (सन् १८४८ ई०) तक अबाध रूप से रही है।

श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी का शुभागमन-

यह नियम तो सदा से ही है कि तीर्थ यात्रा करने वाले यात्रीजन तीर्थ यात्रा करके जब तक तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज में आकर स्नान न कर लें तब तक उनकी यात्रा सफल नहीं होती, आज भी ऐसी मान्यता है। चारों धाम, सप्तपुरी, गंगा-यमुना आदि की यात्रा कर पुष्कर स्नान करने के लिए आने वाले जन (पहिले पैदल मार्ग इधर से ही होने के कारण) इस निम्बार्कतीर्थ में स्नान करके फिर पुष्कर जाते थे। इस प्रकार नित्य प्रति यात्रियों का यातायात देख विक्रम की १६ वीं शताब्दी में एक प्रसिद्ध तांत्रिक मुसलमान फकीर मस्तिंगशाह ने यहाँ (इस निम्बार्कतीर्थ) पर अपना अड्डा जमा लिया था। उसके द्वारा धर्म परिवर्तन आदि अनेक अत्याचारों एवं यहाँ की मर्यादाओं पर कुठाराघात देख धार्मिक जनता ने यहाँ का आधिपत्य तत्कालीन श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति आचार्यप्रवर जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के आधीन जान जो कि उस समय मथुरा में श्रीनारद टीला पर विराजमान थे, जाकर प्रार्थना की। यदि उनका यहाँ कोई विशेष सम्बन्ध न होता तो धार्मिक जनता इतनी दूर जाकर उनसे ही प्रार्थना क्यों करती और वे भी श्रीसर्वेश्वर प्रभु

की सेवा में संलग्न अपने परम प्रियतम शिष्य श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी को इसकी सुरक्षार्थ यहाँ भेजने का अनुरोध क्यों करते? श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी भी विपद्ग्रस्त इस बीहड़ वन में जमकर यहाँ के वातावरण सुधार का कष्ट क्यों करते? ठीक है, सन्तजन दयालु होते हैं, स्वयं कष्ट करके भी परोपकार में रत रहते हैं-इस कारण श्रीगुरुदेव की आज्ञा से श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी आये। यवनों का आतंक शान्त हुआ। इसके बाद भी मथुरा जैसे स्थान को छोड़कर यहाँ पर आचार्यपीठ की स्थापना का क्या उद्देश्य था? यदि इधर भी आचार्यपीठ स्थापना का विचार हुआ तो फिर तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को छोड़कर इस परम एकान्त जंगल में क्यों? इससे यह निश्चय हो जाता है कि यहाँ पर श्रीनिम्बार्कतीर्थ था और इस सम्बन्ध के कारण यहाँ अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना हुई।

निम्बार्कतीर्थ के अन्वेषण का श्रेय अधिकारी श्रीव्रजवल्लभ-शरणजी वेदान्ताचार्य, पंचतीर्थ, वृन्दावन को जाता है। आज से लगभग ४० वर्ष पूर्व अधिकारीजी का इसी तीर्थ के सम्बन्ध में ''पिचुमन्दार्क तीर्थ'' के नाम से एक लेख वाराणसी के ''गीताधर्म'' नामक मासिक पत्र में निकला था, पर उस समय किसी का इधर की ओर विशेष ध्यान नहीं गया। सन् १९७५ में जब श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में अ० भा० सनातन धर्म सम्मेलन हुआ तब धार्मिक जनता की मांग पर सलेमाबाद के स्थान पर निम्बार्कतीर्थ नाम की घोषणा हुई तो वही पुरानी बात वर्तमान आचार्यश्री को स्मरण हो आई और इसी प्राचीन नाम की पुरी शंकराचार्य श्रीनिरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के द्वारा असंख्य जन समुदाय के मध्य घोषणा हुई। कोई नवीन नामकरण नहीं किया गया है।

--गोविन्ददास 'सन्त'

श्रीनिम्बार्कतीर्थ माहात्म्य

एवम्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के दर्शनीय स्थल

❋ श्रीमहादेव उवाच ❋

यह प्रसङ्ग श्रीमहादेवजी महाराज अपनी परम प्रिया जगदम्बा भगवती श्रीपार्वतीजी को सुना रहे हैं--

पिप्पलादात्ततस्तीर्थात्पिचुमन्दार्क मुत्तमम् ।
तीर्थं साभ्रमतीतीरे व्याधिदौर्गन्ध्यनाशनम् ।।१ ।।
पुरा कोलाहले युद्धे दानवैर्निर्जिताः सुराः ।
वृक्षेषु विविशुस्तत्र सूक्ष्माः प्राणपरीप्सया ।।२ ।।
तत्रविल्वे स्थितः शंभुः अश्वत्थे हरिरव्ययः ।
शिरीषेऽभूत्सहस्राक्षो निम्बे देवः प्रभाकरः ।।३ ।।
एवमादियथायोग्यं वृक्षेषु विवुधास्तथा ।
यावत्कोलाहलो दैत्यो विष्णुना प्रभविष्णुना ।।४ ।।
हतो महाहवे तावत् स्थितास्ते वृक्षमाश्रिताः ।
येन येन हि यो वृक्षो विवुधेन समाश्रितः ।।५ ।।
स तु तन्मयतां यातस्तस्मात्तं न विनाशयेत् ।
इति सूर्यस्य विश्रामात्पिचुमन्दार्कमुत्तमम् ।।६ ।।

तीर्थ रोग हरं स्नानात् साभ्रमत्यास्तटेऽभवत् ।
अत्र गत्वा विशेषेण तं रविं यदि पूजयेत् ।।७।।
पूजयित्वा सुरश्रेष्ठं लभते वाञ्छितं फलम् ।
अत्र द्वादशनामानि गत्वा ये वै पठन्ति च ।।८।।
ते नराः पुण्यकर्माणो यावज्जीवं न संशयः ।
आदित्यं, भास्करं, भानुं, रविंविश्वप्रकाशकम् ।।९।।
तीक्ष्णाशुं, चैव मार्तण्डं, सूर्यं चैव प्रभाकरम् ।
विभावसुं, सहस्राक्षं, तथा पूषणमेव च ।।१०।।
एवं द्वादशनामानि यः पठेत्प्रयतः सुधीः ।
धनं वै पुत्र-पौत्राँश्च लभते नगनन्दिनि ।।११।।
एकैकं नाम आश्रित्य योऽर्चयेत नरो भुवि ।
सप्तजन्मभवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः ।।१२।।
श्रोत्रियो लभते राज्यं वैश्यो धनमवाप्नुयात् ।
शूद्रो वै लभते भक्तिं तस्मात्सूक्तं परं जपेत् ।।१३।।
निम्बार्कतः परं तीर्थं न भूतं न भविष्यति ।
अत्र स्नात्वा च पीत्वा च मुक्तिभागी भवेद्ध्रुवम् ।।१४।।

इति पद्म-पुराणे पञ्चपञ्चाशत्साहस्र संहितायामुत्तरखण्डे उमा-महेश्वर सम्वादे श्रीनिम्बार्कदेवतीर्थनामाष्टपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ।।१५८।।

भावार्थ :- पिप्पलादतीर्थ से कुछ दूर साभ्रमती नदी के किनारे सम्पूर्ण आधि-व्याधियों को मिटाने वाला पिचुमन्दार्क

(निम्बार्कतीर्थ) है। प्राचीन समय में एक कोलाहल नामक दैत्य हो गया है। उसके साथ देवताओं का युद्ध छिड़ गया था। उसके प्रहारों से घबड़ा कर अपने प्राण बचाने के उद्देश्य से देवता सूक्ष्म रूप हो वृक्षों पर जा चढ़े।

जब तक महाविष्णु ने उस कोलाहल दैत्य का वध नहीं किया तब तक शंकरजी विल्ववृक्ष पर, विष्णुजी पीपल पर, इन्द्र शिरीष वृक्ष पर और सूर्य निम्ब वृक्ष पर छिपे रहे। जो-जो देवता जिन-जिन वृक्षों पर रहे थे वे-वे वृक्ष तत्तद्देवमय कहलाये। इसी कारण से इन देव वृक्षों को काटना निषिद्ध माना जाता है। जिस स्थल से इन देव वृक्षों को काटना निषिद्ध माना जाता है। जिस स्थल पर सूर्य ने निम्ब वृक्ष पर निवास किया था, वह "निम्बार्कतीर्थ" कहलाया। इस तीर्थ में स्नान करके निम्बस्थ (नीम में विराजमान) सूर्य (निम्बार्क) की पूजा की जाय तो उस पूजक के समस्त रोग-दोषों की निवृत्ति हो जाती है।

आदित्य, भास्कर, भानु, रवि, विश्व प्रकाशक, तीक्ष्णांशु, मार्तण्ड, सूर्य, प्रभाकर, विभावसु, सहस्राक्ष और पूषण, पवित्र होकर इन बारह नामों के जपने से धन-धान्य, पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति होती है। इन बारह नामों में से किसी एक नाम का भी जपने वाला ब्राह्मण सात जन्मों तक धनाढ्य एवं वेद पारंगत होता है। क्षत्रिय राजा और वैश्य धन-सम्पन्न हो जाता है। शूद्र तीनों वर्णों का भक्त बन जाता है। अधिक क्या कहा जाय। हे पार्वती ! निम्बार्कतीर्थ से बढ़कर और कोई तीर्थ नहीं है, न भविष्य में ऐसा तीर्थ हो सकता है। क्योंकि इस तीर्थ में केवल स्नान और आचमन करने मात्र से ही

मुक्ति (भगवत्प्राप्ति) का पात्र बन जाता है।

इस प्रकार पद्मपुरराण-उत्तरखण्ड के अध्याय १५८ में श्रीमहादेव-पार्वती सम्वादरूप उपर्युक्त इन चौदह श्लोकों में श्रीनिम्बार्कतीर्थ माहात्म्य का फल श्रुति सहित भावार्थ परिपूर्ण हुआ।

श्रीनिम्बार्कतीर्थ स्नान-पूजन विधि

सर्व प्रथम तीर्थ को दण्डवत् प्रणाम कर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा शरीर शुद्धि एवं तीन आचमन करने चाहिये।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

(१) **ॐ केशवायनमः** (२) **ॐ नारायणाय नमः** (३) **ॐ माधवाय नमः**। नेत्रों के जल जगावे, पश्चात् हाथ में जल भर कर संकल्प करे।

ॐ अस्य श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य श्रीसर्वेश्वर विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीमद्‌ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तेक देशान्तर्गते पुण्यक्षेत्रे श्रीपुष्करारण्ये कलियुगे कलि प्रथमचरणे साभ्रमतीतटे श्रीराधामाधवधाम्नि श्रीनिम्बार्कतीर्थे त्रयस्त्रिं-शदधिकोत्तर द्विसहस्त्र संख्याके विक्रमवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकपक्षे अमुकतिथौअमुकवासरे अमुकामुक नक्षत्र योग करणेषु तथा अमुकामुक राशिस्थितेषु सूर्य-चन्द्र-देवगुरुसु शेषेसु ग्रहेसु यथा यथास्थान स्थितेसु सत्सु अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं सकल दुरितोपशमनार्थं श्रीराधासर्वेश्वर प्रीत्यर्थंच श्रीनिम्बार्कतीर्थे स्नानमहं करिष्ये।

तदनन्तर अंकुश मुद्रा द्वारा नीचे लिखे मन्त्रों से समस्त तीर्थों का तीर्थ जल में आवाहन करे।

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।
गंगेच यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् संनिधिं कुरु।।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु मया प्रोक्ताः स्नानकाले सदा मम।।

आवाहन के पश्चात् तीर्थजल से इन मन्त्रों द्वारा अपने शरीर पर मार्जन करे।

ॐ आपोहिष्ठामयो भुव, स्तान ऊर्जे दधातन, महेरणाय चक्षसे, यो वः शिवतमोरसः, तस्य भाजयतेहनः, उशतीरिव मातरः, तसमा अरंग मा मवो, यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपोजन यथाचनः।

तत्पश्चात् तीर्थ मृत्तिका को दोनों हाथों में लेकर निम्न-लिखित मन्त्रोच्चारण पूर्वक शिर से लेकर कटिपर्यन्त लेपन करते हुए स्नान करे--

अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णु क्रान्ते वसुन्धरे।
मृत्तिके हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्।।

फिर शुद्ध स्नान कर नीचे लिखे क्रमानुसार तर्पण करना चाहिये। जल के बीच में अष्टदल कमल बनाकर मध्य में "क्लीं" यह काम बीज लिखकर तर्पण करे।

ॐ गुरुँ स्तर्पयामि (यदि गुरुजी विद्यमान हों तो यह शब्द

न बोलें) आगे ॐ **परम गुरुँस्तयामि । ॐ अस्मद् गुरुँस्तर्पयामि । ॐनारदादि देव ऋषिन्तर्पयामि । ॐ पूर्वसिद्धांस्तर्पयामि । ॐ भागवतांस्तर्पयामि । ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मने योगपीठात्मने नमः योगपीठात्मकं श्रीकृष्णं तर्पयामि ।**

इस प्रकार कर्णिका में श्रीकृष्ण का ध्यान कर मूलमन्त्र के अन्त में--**श्रीकृष्णं तर्पयामि** यह बोलते हुए २८ अञ्जली जल से श्रीकृष्णनाम से तर्पण करे। पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहिन पूजन करे।

"**श्रीनिम्बार्कतीर्थाय नमः**" कहकर तीर्थ का ध्यान करके निम्नलिखित मन्त्र से दुग्ध स्नान करावे।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।।

दुग्ध स्नान के बाद वस्त्रोपनीत गन्धाक्षत, पुष्प-धूप-दीप-नैवैद्याचमनीय फल दक्षिणादि द्रव्य समर्पण कर नमस्कार करे।

इस प्रकार तीर्थ-पूजन के पश्चात् उसी स्थल पर मुख्य द्वार की ओर स्थित नीम के नीचे पूर्व किंवा उत्तर की ओर मुख करके बैठ जाय और उसी पूजन थाली में से पूजन सामग्री द्वारा निम्बस्थ श्रीसूर्य का पूजन करे। पूर्ववत् संकल्प पढ़ के "**निम्बस्थ श्री सूर्य पूजन महं करिष्ये**" यह बोल कर बायें हाथ में अक्षत लेकर निम्न स्तोत्र से सूर्य का पूजन करे--

आदित्यं भास्करं भानुं रविं विश्वप्रकाशकम् ।
तीक्ष्णांशुं चैव मार्तण्डं सूर्यं चैव प्रभाकरम् ।।

विभावसुं सहस्राक्षं तथा पूषणमेव च ।
एवं द्वादशनामानि यः पठेत्प्रयतः सुधीः ।।
धनं वै पुत्र पौत्रांश्च लभते नगनन्दिनि ।
एकैकं नाम आश्रित्य योऽर्चयते नरोभुवि ।
सप्त जन्म भवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः ।।
क्षत्रियो लभते राज्यं वैश्यो धनमवाप्नुयात् ।।
शूद्रो वै लभते भक्तिं तस्मात्सूक्तं परं जपेत् ।।

अक्षत छोड़े--

ॐ आदित्याय नमः । ॐ भास्कराय नमः । ॐ भानवे नमः । ॐ रवये नमः । ॐ विश्व प्रकाशकाय नमः । ॐ तिक्ष्णांशवे नमः । ॐ मार्तण्डाय नमः । ॐ सूर्याय नमः । ॐ प्रभाकराय नमः । ॐ विभावसवे नमः । ॐ सहस्राक्षाय नमः । ॐ पूष्णे नमः ।

इन द्वादश नामों से नीम वृक्ष का आवाहन करके पूजन करे। पूजन में रक्त पुष्प, रक्त चन्दन का प्रयोग उत्तम है।

पूजन करके दण्डवत् प्रणाम करे। उपर्युक्त द्वादश नामों में रुचि के अनुसार बैठकर किसी एक नाम का १०८ जप करे। इसकी फलश्रुति यह है कि जपकर्ता को धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है। ब्राह्मण सात जन्म पर्यन्त धनाढ्य एवं वेद पारंगत होता है। क्षत्रिय राजा बनता है। वैश्य धनी और शूद्र परम भक्त बन जाता है।

दर्शनीय - स्थल

श्रीसर्वेश्वर भगवान्--

यहाँ के प्रमुख पूज्य अर्चावतार विग्रहों में श्रीसर्वेश्वर (शालग्राम) भगवान् के दर्शन मुख्य हैं। इतने सूक्ष्म विग्रह वाली शालग्राम स्वरूप विश्व में एक ही है। श्रीसनकादिकों से लेकर आज तक सभी पूर्वाचार्य इनकी आराधना में निरन्तर संलग्न रहते आये हैं। आचार्य जहाँ भी रहें, श्रीसर्वेश्वर प्रभु साथ ही रहते हैं। विशेष जानकारी के लिए "श्रीनिम्बार्क पाक्षिक-पत्र" का सन् १६७५ का विशेषांक "श्रीसर्वेश्वर अङ्क" देखना चाहिये। यह एक ही ग्रन्थ श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सम्बन्ध की समस्त जानकारी एवं शंकाओं के समाधान के लिए पर्याप्त है।

श्रीराधामाधव भगवान्--

आचार्यपीठ में विराजमान श्रीराधामाधव भगवान् की अद्‌भुत छटा दर्शनीय है। जिस भाग्यशाली (भक्त) को एक बार भी इस सौन्दर्य-माधुर्य-पूर्ण लावण्य भरी श्रीप्रतिमा स्वरूप के दर्शनों का सौभाग्य संप्राप्त हो जाता है, तो बस उसके लिये "जिन आंखिन सों यह रूप लख्यो उन आंखिन सों अब देखिये का" वाली सदुक्ति पूर्ण चरितार्थ हो जाती है।

यह श्रीगीत गोविन्दकार रसिक शिरोमणि श्रीजयदेव महा-कवि के सेव्य स्वरूप हैं। यह विक्रम सं० १८२६ ज्येष्ठ शुक्ला १० दसमी को यहाँ पधार कर विराजमान हुए। आपके यहाँ पधारने की अद्‌भुत कथा किशनगढ राज्य की तवारीख (इतिहास विभाग के

रिकार्ड) में विशद् रूप से उल्लिखित है। वह संक्षेप में इस प्रकार है-

श्रीजयदेव के परमधाम वास होने पर ४-५ सौं वर्ष बाद श्रीराधामाधव भगवान् की दिव्य प्रतिमा श्रीराधाकुण्ड के अति सन्निकट ललिताकुण्ड के पावन तट पर श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की बैठक (व्रज मण्डल) में आकर विराजमान हुई। श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधीश्वर श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी महाराज को स्वप्न में आपका आदेश मिला कि "हमें रथ में बिठाकर आचार्यपीठ सलेमाबाद ले चलो" इस आदेशानुसार जब रथ में विराजमान कर आचार्यश्री चले और भरतपुर आकर राजभोग सेवा करने को ठहरे, तब राधाकुण्ड गोवर्धन आदि के कुछ व्रजवासी जनों ने आकर आचार्यश्री से प्रार्थना की-महाराज ! श्रीराधामाधव भगवान् को व्रज से बाहर न ले जायें। आचार्यश्री ने कहा--इन्हीं की इच्छा है। भरतपुर नरेश तक भी चर्चा पहुँचाई। तब भरतपुर नरेश ने सब व्रजवासियों को कहा--आप रथ को लौटाकर ले जावो यदि श्रीराधामाधवजी की इच्छा होगी तो वापिस पधार जायेंगे। आचार्य "श्रीजी" महाराज को हम राजी कर लेंगे आये हुए व्रजवासी और बहुत से भरतपुर निवासी भी जुट गये किन्तु रथ आगे न बढा। चकित होकर जनता बैठ गई। सेवा के पश्चात् जब आचार्यश्री ने प्रार्थना करके रथ को खैंचा तो रथ चल पड़ा और यहाँ आ पहुँचा। वही श्रीराधामाधव भगवान् आचार्यपीठ के मध्य (बीच के) मन्दिर में विराजमान हैं।

आचार्य मन्दिर--

भगवान् श्रीराधामाधव व श्रीसर्वेश्वर प्रभु के बायें उत्तर भाग वाले मन्दिर में **श्रीगोकुलचन्द्रमाजी** एवं **श्रीबांकेविहारीजी**

के दर्शन हैं और दायें (दक्षिण) भाग में आचार्य मन्दिर है, जहाँ श्रीहँस, श्रीसनकादि, श्रीनारद, श्रीनिम्बार्क और श्रीनिवासाचार्य, इन आचार्य पंचायतन के सुन्दर दर्शन हैं। उत्तर भाग में अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर रसकिराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के चित्र रूप में अनुपम दर्शन हैं एवं पूर्वाचार्य परम्परा के चित्र स्वरूप में अतीव मनोहर दर्शन हैं। मन्दिर के बड़े चौक में दोनों ओर क्रमशः श्रीभगवत् पार्षद रूप श्रीहनुमान्जी एवं श्रीगरुडजी के दिव्य स्वरूप सुशोभित हैं। दक्षिण में नीचे उतरने पर **"सिद्ध पीठ"** के दर्शन हैं, यहाँ सिंहासन और श्रीपरशुरामदेवा-चार्यजी महाराज के दिव्य चित्रपट और आपश्री से परवर्ती आचार्य परम्परा के चित्रों के सुन्दर दर्शन और वेद भगवान् विराजित हैं। एवं हवनकुण्ड के दर्शन हैं। हवनकुण्ड की भस्म, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की समर्पित तुलसीदल, श्रीनालाजी का जल, श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सर्वेश्वर कुण्ड) की रज, आदि को यहाँ से श्रद्धालु भक्त ले जाते थे। बहुत से भक्त दूर-दूर से विनय पत्र भेजकर मंगवाते थे। सिद्ध पीठस्थ आचार्य प्रतिमा के पिछवाड़े योग पीठ है, यह निरावरण (खुल्ला) है। यहाँ श्रीस्वामीजी महाराज (श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी) के रेखा चित्र की सभी भावुक भक्तजन पूजा आराधना कर सकते हैं।

१. साधु सन्तों की पंगत होने के अनन्तर धोने आदि का जो जल इसी मन्दिर के नीचे होकर बाहर जाता था, वही नालाजी कहे जाते हैं। भयंकर व्याधि से पीडित भावुक भक्त श्रद्धा पूर्वक उसका पान करके व्याधिमुक्त होकर स्वस्थ हो जाते थे।

२. जयपुर, राघोगढ़, फतेहगढ़, बीकानेर आदि राज्यों के

नरेश राजरानी आदि भक्तजनों की इस सम्बन्ध में वि० सं० १९०० तक की चिट्ठियाँ भी आचार्यपीठ में उपलब्ध होती हैं।

श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सरोवर)--

यह तीर्थ स्थल चारों ओर से व्रज की प्राचीन लता-पताओं के सदृश सुशोभित है। यह प्रदेश श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की स्थापना काल से ही प्रायः सजल और सरस था। बड़े-बूढों का कहना है कि किसी समय इस तीर्थ के चारों ओर एक सुन्दर उद्यान भी था, जिसमें अनेक प्रकार के फल-पुष्पादि उत्पन्न होकर भगवान् की सेवा में आते थे। यहाँ दश-बारह हाथ जमीन खोदने पर ही जल निकल आता था। वर्तमान में भी यह तीर्थ अतीव शोभायमान है, इस तीर्थ की परिक्रमा भी भक्तजन दैनिक करते हैं।

समय की गति-विधि के कारण वि० सं० १९५४ से लेकर वि० सं० २०३१ पर्यन्त मध्यकाल में ऐसी नीरसता का साम्राज्य आया कि जलाभाव के कारण अच्छे-अच्छे कूप-बावड़ियों की शोभा नष्ट हो गई। उत्पादन कम हो गया। व्यापारीगण भी नगर छोड़ कर बाहर जा बसे। वही समय फिर बदला कि वि० सं० २०३१ के चैत्र कृ०३ से ७ पर्यन्त इसी पीठ में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन होने के पश्चात् आने वाले वर्षाकाल में इतनी वर्षा आई कि श्रीनिम्बार्कतीर्थ के चारों ओर जल ही जल होगया। श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव की कृपा से वही सरसता फिर आगई। कूप-बावड़ी भर गये। उत्पादन बढ गया। इस समय श्रीनिम्बार्कतीर्थ के चारों ओर नदी नाले बहने लगे। श्रीनिम्बार्कतीर्थ ही नहीं, अपितु पूरा राजस्थान ही बिहार बंगाल वत् हो गया। भगवान् की लीला बड़ी विचित्र है।

नगर के अन्यान्य देवमन्दिर--

१. श्रीविजयगोपालजी का मन्दिर
(यह श्रीआचार्यपीठ के संरक्षण में है)
२. श्रीविहारीजी का मन्दिर
३. श्रीनृसिंहजी का मन्दिर (यह भी आचार्यपीठ के संरक्षण में है)
४. श्रीआनन्दघनजी का मन्दिर
५. श्रीगोपालजी का मन्दिर (व्यासावास)
६. श्रीटीलास्वामीजी का मन्दिर
७. श्रीगोपालजी का मन्दिर (अहीरावास)
८. बोहरेजी की बावड़ी के हनुमानजी
९. बाली के हनुमानजी
१०. श्रीनिम्बार्कतीर्थ तटीय भाग पर श्रीशिवपंचायतन, श्रीहनुमान्जी एवं श्रीसूर्य भगवान् मन्दिर
११. सिद्ध गणपति मन्दिर (व्यासावास)
१२. शीतला मन्दिर (कुम्हारावास)
१३. शीतला मन्दिर (व्यासावास)
१४. तिबारी वाले हनुमानजी
१५. प्राचीन शिवालय (व्यासावास)

समाधि स्थल--

सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी के अनन्तर जिन-जिन आचार्यों का यहाँ लीला विस्तार हुआ, उनमें श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज की समाधि पुरानी है। तिजारा एकांतरा आदि ज्वरों से मुक्त होने के

लिये जो इस समाधि का आश्रय लेता है, वह अवश्य रोग मुक्त हो जाता है। इन समाधि स्थलों में आचार्यों के चरण पादुकाओं की पूजा होती है। इन समाधियों के पूजन से श्रद्धालु भक्तजनों की कामनायें भी पूर्ण होती थीं और हो भी रही हैं। इन पूर्वाचार्य समाधि स्थलों में यहाँ हनुमान्‌जी का मन्दिर एवं शिवालय तथा चारों ओर सुरम्य पुष्प वाटिका भी है।

विशाल वापिका--

नगर में एक विशाल वृहद् वापिका (बावड़ी) है जो सुन्दर पत्थर की बनी हुई है। यह बोहरेजी की बाबड़ी है, किन्तु इसमें कहते हैं चार-पाँच चोर छिप गये थे, उनका पता छः मास तक नहीं लगा, अतः इसे बहुत से ग्रामीण व्यक्ति चोर बावड़ी के नाम से ही कहते हैं। वास्तव में इसके कई खण्ड हैं उनमें विशाल-विशाल कमरे भी हैं, उनमें आकर कोई छुप जाय तो पता नहीं लग सकता। यह विक्रम संवत् १७१५ में यहाँ के कुबेर सदृश धनाढ्य ननवाणा बोहरा श्रीहृदयराम के द्वारा बनवाई गई थी। शिलालेख में उत्कीर्ण इस प्रकार का दोहा है--

अविचल काम अनूपजल जुजैन जाय।
प्राज्ञीपति स्याही लगै ब्रह्म हरीची वाय।।

(सम्वत् १७१५ लिखित ब्रौ हरदौराम)

भारतीय दर्शनार्थियों के अतिरिक्त विदेशी पर्यटक भी जब यहाँ आते हैं तो इस बावड़ी को देखकर चकित हो जाते हैं।

श्रीधर वाटिका--

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) निवासी पं० श्रीधर शिवलालजी

ज्ञानसागर छापाखाना बम्बई वालों द्वारा निर्मित इस वाटिका में श्रीहनुमान्जी महाराज के सुन्दर दर्शन हैं। अतः इसे श्रीहनुमानजी की बगीची भी कहते हैं। चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ों की सघन छाया एवं जलाशय भी है। ज्ञानसागर छापाखाना के वर्तमान अध्यक्ष (पं. श्रीधर शिवलालजी के ही वंशज) पं. व्रजमोहनजी प्यारेमोहनजी की देख-रेख में श्रीहनुमानजी की सेवा-पूजा सुचारु रूप से चलती है। श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठ में होने वाले जन्माष्टमी महोत्सव के तीसरे दिन यहाँ भी श्रीहनुमान्जी का बड़ा भारी मेला लगता है।

पुस्तकालय--

आचार्यपीठ में एक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का भी विशाल संग्रह है। इस पुस्तकालय में श्रीनारद पंचरात्र आदि बहुत से दुर्लभ ग्रन्थ हैं। महाभारत भागवत आदि विशाल ग्रन्थ तक एक पत्र में उल्लिखित हैं। बहुत से ग्रन्थ अस्त-व्यस्त भी हो गये। भूतपूर्व आचार्यश्री की उदारता एवं दयालुता के कारण बहुत से ग्रन्थों को कई एक व्यक्ति उड़ा लेगये।

सागरमाला पर्वत--

आचार्यपीठ से पश्चिम दिशा में लगभग ६ क़िलोमीटर पर यह पर्वत है, इसकी उपत्यका छः हजार बीघा में विस्तृत थी। जिसमें वीहड़ जंगल था, यहाँ केवल गोचारण होता था। सिंह व्याघ्र जैसे हिंसक जन्तु यद्यपि यहाँ रहते थे तथापि वे इस परिधि में प्राणियों का वध नहीं करते थे। यहाँ इस क्षेत्र में कोई नरेश भी आखेट (शिकार) नहीं कर सकते थे। यहाँ कोई व्यक्ति पशु-पक्षी पर गोली चला देता,

उसको छः मास की सजा हो जाती थी। इस उपवन का हरा वृक्ष कोई नहीं काट सकता था। बादशाहों की सेना जब इधर से आती-जाती तो उनको विशेष आज्ञा की जाती थी कि सागरमाला के वृक्षों को कोई न छेड़े, एक पत्ता भी न तोड़ा जाय।

तभी यह तीर्थ ऋषियों के पावन आश्रमों के समान सुन्दर तीर्थ तपोवन बना हुआ था।

जब विक्रम संवत् १७८९ में एक भयंकर सिंह प्राणियों की हिंसा करने लगा, तब श्रीवृन्दावनदेवचाचार्यजी महाराज की आज्ञानुसार किशनगढ के महाराज कुमार श्रीसांवतसिंह जी (नागरीदास) जी ने दिल्ली से आकर द्वन्द्व (मल्ल) युद्ध करके उस सिंह को पछाड़ा था तथा श्रीनागरीदासजी की वाणी ग्रन्थ में भी उक्त चित्र प्रकाशित है । उसके विशाल चित्र किशनगढ राज्य के खजाने में सुरक्षित हैं। यहाँ के जलाशय की छटा भव्य है। किन्तु आचार्यपीठ की यह भूमि वर्तमान में राज्य सरकाराधीन है इस पहाड़ में बहुत सी जड़ी-बुटियाँ भी होती हैं।

तेजाजी का चबूतरा--

तेजाजी बड़े गोभक्त होगये हैं। उनका चबूतरा बना हुआ है। सांप के डसे हुए व्यक्ति के यहाँ एक डोरा बांधा जाता है। उसी से सर्प का विष उतर जाता है। भाद्रपद शुक्ला दशमी (तेजा दशमी) को सर्वत्र श्रीतेजाजी के स्थानों में मेला लगता है और विशेष पूजा होती है।

प्रदक्षिणा--

यहाँ आचार्यपीठस्थ श्रीराधामाधव सर्वेश्वर भगवान् की

अन्दर मन्दिर में तो प्रदक्षिणा होती ही है, उसके बाहर भी दो प्रदक्षिणा (परिक्रमा) और होती हैं, उनमें पहिली केवल मन्दिर मात्र की होती है और दूसरी समस्त नगर (पुरी) की प्रदक्षिणा होती है। ये दोनों बाहरि परिक्रमा पर्वो पर एकत्रित होने वाली जनता करती है। श्रीगिरीराजजी की परिक्रमा की भाँति यहाँ की परिक्रमा करने से कई एक भक्तों की कामनायें पूर्ण होती रही हैं।

शिला - लेख--

एक हजार वर्ष पूर्व इस निम्बार्कतीर्थ के सन्निकट एक बहुत विशाल नगर बसा हुआ था, जिसे 'बहवलपुर' कहते थे। दैवयोग से उसका ध्वंस होगया। आचार्यपीठ के चारों ओर २-२, ४-४ मील पर बसे हुये छोटे-छोटे ग्रामों के अन्दर और बाहर बहुत शिलालेख हैं, जो विक्रम की दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी तक के पुराने हैं। विक्रम की शताब्दी में यहाँ की राजधानी (रूपनगर) की जहाँ स्थापना हुई वहाँ एक छोटा सा ग्राम बबेरा बसा हुआ था जो उस बहवलपुर का ही अपभ्रंश नाम समझा जाता था। लगभग २५० वर्षों से ही बबेरा रूपनगर कहला रहा है।

आचार्यपीठ एवं निम्बार्कतीर्थ ने भी अनेकों उतार-चढ़ाव देखे हैं। बहुत पुराने समय की बात नहीं, लगभग दो सौ वर्ष पूर्व इस मन्दिर का जब यवनों ने ध्वंस कर दिया था, तब श्रीराधामाधव भगवान् ६ मास तक रूपनगर के किले में विराजे। लुटेरों के आतङ्क शान्त होने पर मन्दिर के ध्वंसावशिष्ट की जीर्णोद्धार और ध्वस्त भाग का पुनर्निर्माण कराया गया। इसी प्रकार पहिले भी इसका कई बार ध्वंस और पुनर्निर्माण होता रहा है। फिर भी यह प्राचीन पुनीत

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ जन-कल्याण कार्य में अग्रसर है। इसके स्वाभाविक महत्व को जानकर जो सज्जन यहाँ की यात्रा करके देव-दर्शन, तीर्थराज का स्पर्श और आचार्यचरण के सदुपदेश प्राप्त करके भगवच्चिन्तन करते हैं, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से उनकी अवश्य अभीष्ट पूर्ति हो जाती है।

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

की

पारमार्थिक संस्थायें

१. **श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय** - इस प्रेस में आचार्यपीठ का धार्मिक साहित्य का प्रकाशन होता है। छपाई-सफाई सुन्दर-सस्ती एवं निर्धारित समय पर काम करके दिया जाता है। भक्तजनों को अपना-अपना प्रकाशन सम्बन्धी कार्य भेजकर इसको प्रगतिशील बनाने में पूर्ण प्रयत्न करना चाहिये।

२. **'श्रीनिम्बार्क' पाक्षिक-पत्र** - यह पत्र पाक्षिक रूप से अंग्रेजी मास की ३ और १८ तारीख को प्रतिपक्ष प्रकाशित होता है। इसके मुख पृष्ठ पर आचार्यश्री के सदुपदेश के अतिरिक्त धार्मिक लेख, कविता, समाचार एवं जीवनोपयोगी कल्याणकारी सुन्दर सामग्री रहती है। वार्षिक शुल्क ६०) रु० मात्र और आजीवन सदस्य शुल्क ७०१) रु० है।

३. **श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय** - राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त इस विद्यालय में छात्रों की राजस्थान सरकार बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रवेशिका, उपाध्याय एवं संस्कृत विश्वविद्यालय राजस्थान

की शास्त्री तक आदि परीक्षाओं का अध्यापन कराया जाता है।

४. श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय - इस विद्यालय में सभी प्रान्तों के छात्रों को "सम्पूर्णानन्द विश्व विद्यालय वाराणसी" की प्रथमा मध्यमा की परीक्षायें दिलाई जाती है। यह विद्यालय भी उक्त वाराणसी विश्व विद्यालय से मान्यता प्राप्त है। किन्तु वर्तमान समय में इस विद्यालय का स्थानान्तरण श्रीनिम्बार्क भगवान् की तपःस्थली निम्बग्राम (गोवर्धन) उ० प्र० में कर दिया गया है।

५. श्रीसर्वेश्वर वेद विद्यालय - संस्कृत अकादमी-जयपुर (राज०) सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त इस विद्यालय में छात्रों को सस्वर वेदाध्ययन कराया जाता है।

६. श्रीराधासर्वेश्वर छात्रावास - इस छात्रावास में प्रायः दोनों विद्यालयों के मिलाकर कुल ६० छात्रों के निवास की व्यवस्था है। भोजन, वस्त्र, पुस्तक, आवास, प्रकाश, परीक्षा शुल्क एवं परीक्षा देने हेतु जाने-आने का मार्ग-व्यय आचार्यपीठ की ओर से ही होता है।

७. श्रीनिम्बार्क पुस्तकालय-इस वृहद् प्राचीन पुस्तकालय में लग-भग प्रकाशित एवं अप्रकाशित हस्तलिखित पांच हजार ग्रन्थ हैं।

८. श्रीहंस वाचनालय - इस वाचनालय में आचार्यपीठ द्वारा संचालित 'श्रीसर्वेश्वर' मासिक तथा 'श्रीनिम्बार्क' पाक्षिक के अति-रिक्त त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक एवं दैनिक समाचार आदि अनेक पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। सभी को पढ़ने की बड़ी सुविधा है।

९. श्रीहरिव्यास पारमार्थिक औषधालय - इस औषधालय द्वारा असहाय रोगियों को निःशुल्क औषधि संप्राप्त होती है।

१०. श्रीराधामाधव गोशाला - इस गोशाला में गायों के आवास

की समुचित व्यवस्था है। यहाँ का गो-दुग्ध एवं गोघृत प्रतिदिन भगवत् सेवा कार्य में आता है तथा गोबर खाद के रूप में कृषि भूमि के उपयोगार्थ लिया जाता है।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

संलग्न संस्थायें--

मुद्रणालय--

१.श्रीसर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन

विद्यालय तथा छात्रावास--

२. श्रीसर्वेश्वर संस्कृत शोध विद्यालय, वृन्दावन

३. श्रीसर्वेश्वर छात्रावास, वृन्दावन

४. श्रीनिम्बार्क शिशु मन्दिर, वृन्दावन

पुस्तकालय--

५. श्रीसर्वेश्वर पुस्तकालय, मदनगंज-किशनगढ

६. श्रीराधामाधव पुस्तकालय, निम्बार्ककोट, अजमेर

७. श्रीनिकुञ्ज पुस्तकालय, वृन्दावन

प्रकाशन--

८. श्रीसर्वेश्वर शोध प्रकाशन, वृन्दावन

९. 'श्रीसर्वेश्वर' मासिक वृन्दावन

सत्संग प्रचार--

१०. श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर, मदनगंज-किशनगढ

११. श्रीनिम्बार्क सत्संग मण्डल, अजमेर

१२. श्रीनिम्बार्क भजनाश्रम, परशुरामद्वारा, पुष्कर

१३. श्रीनिकुञ्ज सत्संग मण्डल, वृन्दावन

महोत्सव आयोजन--

१. झूलन महोत्सव - श्रीनिम्बार्कतीर्थ

२. झूलन महोत्सव 'श्रीजी' का बड़ा मन्दिर, वृन्दावन

३. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, निम्बार्कतीर्थ

४. श्रीराधाष्टमी, श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर,
मदनगंज-किशनगढ

५. श्रीभागवत जयन्ती, निम्बार्ककोट अजमेर

६. श्रीनिम्बार्क जयन्ती, अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ एवं श्रीपरशुरामद्वारा पुष्कर

सन्त सेवा--

१. श्रीनिम्बग्राम

२. वृन्दावन

३. जयपुर

४. श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

५. पुष्कर

६. अजमेर

७. श्रीनिम्बार्क नगर (कुम्भ पर्वों पर)

८. श्रीनिम्बार्कमारुति मन्दिर, खातोली-मोड

अनादि वैदिक श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की

आचार्य - परम्परा

आचार्य-नामावली	रहस्य-नाम	उत्सव-मास-तिथि
१. श्रीहंस भगवान्		कार्तिक शु० ९
२. महर्षिश्रीसनकादि भगवान्	(हरिणी आदि)	कार्तिक शु० ९
३. देवर्षि श्रीनारद भगवान्	(मुग्धादि)	मा०शी०शु० १२
४. श्रीसुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य	(श्रीरङ्गदेवी)	कार्तिक शु० १५
५. श्री श्रीनिवासाचार्यजी	(नव्यवासा)	माघ शु० ५
६. श्रीविश्वाचार्यजी	(विश्वाभा)	फाल्गुन शु०४
७. श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी	(उत्तमा)	चैत्र शु० ६
८. श्रीविलासाचार्यजी	(विलासा)	वैशाख शु० ८
९.श्रीस्वरूपाचार्यजी	(सरसा)	ज्येष्ठ शु० ७
१०. श्रीमाधवाचार्यजी	(मधुरा)	आषाढ शु० १०
११. श्रीबलभद्राचार्यजी	(भद्रा)	श्रावण शु० ३
१२. श्रीपद्माचार्यजी	(पद्मा)	भाद्र शु० १२
१३. श्रीश्यामाचार्यजी	(श्यामा)	आश्विन शु०१३
१४. श्रीगोपालाचार्यजी	(शारदा)	भाद्र शु० ११
१५. श्रीकृपाचार्यजी	(कृपाला)	मा.शी. शु.१५
१६. जाह्नवीकार श्रीदेवाचार्यजी	(देवदेवी)	माघ शु० ५
१७. सेतुकार श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी	(सुन्दरी)	मा.शी.शु.२
१८. श्रीपद्मनाभ भट्टाचार्यजी	(पद्मालया)	वैशाख कृ० ३
१९. श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी	(इन्दिरा)	चैत्र कृ० ४
२०. श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी	(रामा)	वैशाख कृ० ५
२१. श्रीवामनभट्टाचार्यजी	(वामा)	ज्येष्ठ कृ० ६

२२. श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी	(कृष्णा)	आषाढ कृ० ९
२३. श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी	(पद्माभा)	आषाढ कृ० ८
२४. श्रीश्रवणभट्टाचार्यजी	(श्रुतिरूपा)	कार्तिक कृ० ९
२५. श्रीभूरिभट्टाचार्यजी	(भगवती)	आश्विन कृ० १०
२६. श्रीमाधवभट्टाचार्यजी	(माधवी)	कार्तिक कृ० ११
२७. श्रीश्यामभट्टाचार्यजी	(असिता)	चैत्र कृ० १२
२८. श्रीगोपालभट्टाचार्यजी	(गुणाकरी)	पौष कृ० ११
२९. श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी	(वल्लभा)	माघ कृ० १४
३० श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी	(गौराङ्गी)	श्रावण शु० ७
३१. श्रीकेशवभट्टाचार्यजी	(केशी)	चैत्र शु० १
३२. श्रीगांगलभट्टाचार्यजी	(पवित्रा)	चैत्र कृ० २
३३. श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी	(कुंकुमांगी)	ज्येष्ठ शु० ४
३४. श्रीश्रीभट्टाचार्यजी	(हितू)	आश्विन शु० २
३५. श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी	(हरिप्रिया)	कार्तिक कृ० १२
३६. श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी	(परमा)	भाद्रपद कृ० ५
३७. श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी	(हितअलवेली)	माघ कृ० ७
३८. श्रीनारायणदेवाचार्यजी	(नित्यनवीना)	पौष शु० ९
३९. श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी	(मनमंजरी)	भाद्र कृ० १३
४०. श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी	(गौराङ्गी)	कार्तिक कृ० ५
४१. श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी	(गुणमंजरी)	कार्तिक कृ० ८
४२. श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी	(रूपमंजरी)	पौष कृ० ६
४३. श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी	(रसमंजरी)	ज्येष्ठ शु० ५
४४. श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी	(प्रेमलता मं०)	ज्येष्ठ शु० ५
४५. श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी	(विलास मं०)	माघ कृ० १०
४६. श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी	(शुक मं०)	आश्विन कृ० ६
४७. श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी	(रति मं०)	चैत्र कृ० १३
४८. श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी	विराजमान	ज्येष्ठ शु० २

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित-

श्रीनिम्बार्कतीर्थाष्टकम्

अनन्तरूपात्मकविष्टपस्य प्रकाशको यो न्यवसच्च यत्र ।
दिवाकरो दिव्यगभस्तिमाली निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।१।।
यद्वर्णनं पद्मपुराणसंस्थं चकास्ति सम्यक्परमं मनोज्ञम् ।
श्रीपुष्करारण्यसमीपवर्ति निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।२।।
निम्बद्रुमे चाऽर्ककृताधिवासान्निम्बार्कतीर्थाऽभिधया प्रसिद्धम् ।
तद्धामरूपं गुरुभिः संसेव्यं निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।३।।
नानाद्रुमस्थै र्विहगै र्विचित्रं केकाऽभिगुञ्ज्यं कमनीयरूपम् ।
निम्बार्कपीठं खलु यत्र रम्यं निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।४।।
श्रीसाभ्रमत्या रुचिरप्रतीरे गभीरनीरेण विसारमर्मैः ।
विशोभमानं हृदयाभिरामं निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।५।।
स्नानेन यत्राऽस्ति महाफलञ्च दानेन यत्राऽस्ति सुखार्थलाभः ।
भावेन सर्वेश्वरभक्तिलाभो निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।६।।
यच्चारुतीरे भजते मुकुन्दं चित्तं स्थिरीकृत्य सुनिष्ठया यः ।
ध्रुवं स भक्तो लभतेऽपवर्गं निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।७।।
संशोभते यत्र मनोज्ञरूपः श्रीराधिकामाधव आप्तवन्द्यः ।
सर्वेश्वरः श्रीसनकादिसेव्यो निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ।।८।।

निम्बार्कतीर्थसंस्तोत्रं हरिभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वरराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।९।।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ की

असाधारण विशेषताएँ

१. भारतवर्षीय समस्त तीर्थों के पूज्य गुरु स्वरूप पुष्करक्षेत्र के अन्तर्गत होने से इस निम्बार्कतीर्थ का विशेष महत्व है।

२. अनादि वैदिक श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय में सर्व पूज्य यह एक ही आचार्यपीठ है।

३. श्रीसनकादि महर्षियों के संसेव्य श्रीसर्वेश्वर भगवान् यहाँ पर ही विराजमान हैं। संसार में इतना प्राचीन शालग्राम विग्रह न कहीं पर किसी ने देखा है और न सुना ही है।

४. संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् महाकवि रसिक भक्त श्रीजयदेवजी के आराध्य ठाकुर श्रीराधामाधव भगवान् भी यहाँ पर ही विराजमान हैं, जिनको कि गुजरात के पुराने भक्त जूना श्रीनाथजी कहते हैं। वास्तव में उनका कहना उचित ही है, क्योंकि जिसने एक बार भी श्रीराधामाधव के दर्शन कर लिए वह यही कहेगा कि-

जिन आँखिन में यह रूप बस्यो, उन आँखिन सों अब देखिय का।

वास्तव में ऐसी अद्भुत मनोहर चमत्कारी प्रतिमा ओर कहीं नहीं देखी जाती।

५. निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के हवन करने का अग्नि कुण्ड और नालाजी यहाँ ही है, जिनके भस्म और पानी से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। जयपुर के महाराजा श्रीजयसिंहजी इन्हीं दोनों की आराधना से उत्पन्न हुए थे।

६. संस्कृत साहित्य के प्राचीन ग्रन्थों का संग्रह और वृक्ष लताओं से सुशोभित श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर यहाँ दर्शनीय है।

७. यहाँ का जलवायु ऐसा उत्तम है कि बिना ही औषधि सेवन किये भी बहुत से असाध्य रोगों को मिटा देता है।

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ निम्बार्कतीर्थ की यात्रा करने वाले महानुभावों के प्रति

आवश्यक - सूचना

१. यह आचार्यपीठ किशनगढ राजस्थान से १८ कि० मी० की दूरी पर उत्तर की ओर एवं अजमेर से भी उत्तर की ओर ४५ कि. मी. की दूरी पर स्थित है।

२. अधिक ठहरने का अवकाश न भी हो तो दूसरे दिन प्रातःकाल उधर से लौटकर आने वाली दोनों ओर की बसों में से किसी में भी बैठकर किशनगढ या अजमेर आया जा सकता है। इस प्रकार ''किसी भी तीर्थ में जाने पर एक रात्रि अवश्य निवास करना चाहिये'' इस शास्त्रीय आज्ञा के परिपालनार्थ यह एक आवश्यक नियम है।

३. यहाँ श्रीसर्वेश्वर भगवान्, श्रीराधामाधव भगवान्, श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की भजनस्थली, धूनि और नालाजी तथा श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर, श्रीराधामाधव गोशाला और बोहरेजी की बावड़ी आदि अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

४. इस प्रकार श्रीनिम्बार्काचार्यचरणों की तपःस्थली इस पुण्यभूमि श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में एक बार अवश्य पधार कर यहाँ की पारमार्थिक सेवायें प्रदान करते हुए अपना सत्परामर्श दें।

सुदर्शनचक्रावतार श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर जगद्‌गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज

आवश्यक–सूचना

1. इस तीर्थ स्थल के चारों और किसी भी घाट पर शौचादि के हाथ धोना तथा साबुन लगाकर नहाना एवं कपड़े धोना आदि का पूर्ण निषेध है, बाहर जल लाकर ये सब कार्य किये जा सकते हैं। तीर्थ की मर्यादा रखना सभी का परम–धर्म है।

2. यों तो तीर्थ की महत्ता हर समय है ही किन्तु भाद्रपद कृष्णा पञ्चमी से लेकर एकादशी पर्यन्त साभ्रमती नदी एवं श्रीनिम्बार्कतीर्थ में स्नान का बड़ा ही महत्व है।

3. तीर्थ पुरोहित द्वारा संकल्प करवा कर उनकी साक्षी में स्नान ही उपयुक्त है।